ISSN : 2583-2948

नारी संघर्ष की अद्वितीय महागाथा: नदी

डॉ. संगीता चौहान
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
एन. एस. पटेल आर्ट्स कॉलेज,
मो- ७६९८२०९८१३

"गलती है हिम शिला सत्य ही गठन देह की खोकर।
पर कितनी महान बन जाती वह पयस्विनी होकर।।"

– रामधारीसिंह 'दिनकर'

हिमशिला अपने मूल रूप में होती है तो उसका दैहिक गठन खूबसूरत होता है। लेकिन जब वह गलती है तो उसके देह का नाश हो जाता है। उसका देह पानी रूप में परिवर्तित हो जाता है। वह पयस्विनी बनकर जीवों के लिए जीवन-दायिनी बन जाती है। हिमशिला की महानता उसके जल रूप में परिवर्तित होने पर है। सृष्टि की आधार-स्तंभ नारी भी तब महान मानी जाती है जब अपने से जुड़े लोगों के लिए वह त्याग और समर्पण करती रहे। सुख-सुविधायुक्त नारी जीवन हिम-शिला की तरह केवल देखने में ही सुंदर प्रतीत होता है। नारी जीवन की सार्थकता उसके संघर्षयुक्त जीवन में है।

वैदिक काल से ही यह माना जाता रहा है कि पुत्र के बिना व्यक्ति की मुक्ति संभव नहीं है। इसलिए इस काल में पुरूष स्त्री की सुरक्षा पर अधिक ध्यान देता था, क्योंकि पुत्र को जन्म देने का कार्य नारी का था। मनुस्मृति में कहा गया है – "यह स्त्रियाँ संतानोत्पत्ति जैसा बड़ा उपकार करने के कारण पूजा के योग्य और घरों की शोभा हैं। घरों में लक्ष्मी और स्त्री दोनों एक समान हैं , इसमें कुछ अंतर नहीं है। संतान जनना, जने हुए का पालन करना और नित्य का गृहकार्य, इनका प्रत्यक्ष कारण स्त्री ही है। संतान, धर्मकार्य, सेवा, उतकृष्ट रति, पितरों का तथा अपना स्वर्ग साध न, यह सभी कुछ पत्नी के अधीन है।"१

समय बदलते पुरूष की विचारधारा भी बदलती गई। उत्तर आधुनिक समय का पुरूष यह मानता है कि नारी अर्थात पत्नी या प्रेयसी उसके हाथ की कठपुतली है। वह कभी-कभी नारी को निजी संपति बनाकर अपने आधिपत्य में रखता है तो कभी-कभी सार्वजनिक संपति मानकर उसकी जिंदगी को मजाक बना देता है।ऐसा करते समय वह यह नहीं सोचता कि जिस नारी को वह हेय दृष्टि से देखता है उसी नारी शरीर से उसकी उत्पति हुई है| मध्यकाल के कवि कबीर जो कि एक समाज सुधारक थे, उन्होंने स्त्री को सम्मान देते हुए कहा था कि –

"नारि पराई आपणीं , भुगत्या नरकहिं जाइ।
आगि आगि सब एक है, तामैं हाथ न बाहि।।"२

उपर्युक्त साखी में उन्होंने पराई या अपनी स्त्री को भोग का साधन माननेवाले पुरूष को नरक का हकदार कहा है। उनकी दृष्टि में काम-वासना भाव केवल सृष्टि के विकास के लिए होता है। नारी को सन्तानोत्पत्ति का माध्यम मानकर उसे सम्मानित मानने का उपदेश कबीर ने दिया है। साथ ही कामी नर अर्थात कामी पुरूष पर बहुत बड़ा व्यंग्य किया है।

भारतीय साहित्य में 'विमर्श' शब्द का प्रचलन वैदिक काल से हुआ है। इस शब्द की व्युत्पत्ति "वि+मृद+धञ" से हुई है। समांतर कोश में इस शब्द के तैंतीस अर्थ दिये गए हैं।३

उत्तर आधुनिक समय में यह देखने को मिलता है कि पहले के समय में जो नारी उपेक्षित एवं शोषित थी, ऐसा अब बहुत हद तक नहीं है। पुरूष और नारी दोनों नौकरीपेशा होने पर पुरूष स्त्री को सहयोग दे रहा है, ताकि जीवन सही ढंग से जी सके । नारी की स्थिति में जो परिवर्तन हो रहा है, जो सुधार हो रहा है – उसको दिखानेवाली साहित्यिक दृष्टि को ही 'नारी विमर्श' नाम दिया जा सकता है। हिंदी साहित्य में यह विमर्श अधिकतर कथा-साहित्य अर्थात उपन्यास और कहानियों के माध्यम से देखा जा सकता है।

हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकार एवं स्त्री –पुरुष -संबंधों के चित्रण में 'बोल्ड लेखिका' के रूप में अपना नाम रोशन करनेवाली तथा 'पचपन खंभे लाल दीवारें ' और

'रूकोगी नहीं राधिका' जैसे उपन्यासों के माध्यम से हिंदी साहित्य में अपना अनूठा स्थान बनानेवाली उषा प्रियंवदा का तीसरा उपन्यास 'नदी' जो कि अपने आप में नारी विमर्श का यथार्थ दस्तावेज है | यह उपन्यास सन् २०१४ में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। तीन खंडो में विभक्त यह उपन्यास १७१ पृष्ठों में सिमटा हुआ है। इस उपन्यास की मुख्य नायिका आकाशगंगा है, जिसका जीवन औरों के कल्याण में छिन्न-भिन्न हो जाता है, लेकिन उपन्यास के अंत में उसका जीवन शांत नदी की तरह ही दृष्टिगोचर होता है। उपन्यास में एक जगह पर नदी के विषय में लेखिका का जो कथन है वह नायिका के जीवन से एकरूप हो जाता है। जैसे – "नदी, जो इधर-उधर घूम-फिरकर राह खोज ही लेती है। गंगोत्री से निकलकर रूद्र प्रयाग, कनखल, हरिद्वार, कानपुर, प्रयाग और न जाने कहाँ-कहाँ से होकर सुंदर बन बंगाल की खाड़ी तक शायद कालिदास ने भी यही कहा है। पढ़े हुए बहुत दिन हो गए हैं।"४

उपन्यास की शुरूआत होती है आकाशगंगा के एक सप्ताह के वाशिंगटन के प्रवास से अपने घर पहुंचने की घटना से। घर पहुंचने पर उसे उसके पति डॉ. गगनेन्द्र सिंहा एवं दोनों बेटियाँ- झरना और सपना नहीं दिखीं।दिखा तो केवल बाहर लोन में एक बोर्ड। जिस पर 'सोल्ड' अर्थात 'बिक गया' लिखा हुआ था। यह सब देखने पर भी आकाशगंगा बिलकुल विचलित नहीं होती है और अपना सामान लेकर घर में जाती है। उसकी पड़ोसिन मार्था उसे जब ये बताती है कि गगनेन्द्र सिंह बेटियों को लेकर इंडिया चले गए हैं,तब मार्था की लाख कोशिशों के बावजूद वह उसी घर में पूरी रात अपने मृत बेटे भविष्य की याद में दु:खी होकर गुजारती है। लेखिका ने उस समय की मन:स्थिति का वर्णन करते हुए ये मर्मस्पर्शी कथन प्रयुक्त किया है - "एक दु:खी माँ जिसने बेटे का नाम भविष्य रखा था। नियति का कितना क्रूर परिहास था... उसका भविष्य था ही नहीं , एक हाथ की उँगलियों पर ही उसकी जीवन अवधि गिनी जा सकी थी।"५

कुदरत ने भविष्य को आकाशगंगा की कोख से छीन लिया था, और इस समय वह पति द्वारा भी त्यागी गई थी। यहीं से उसके जीवन की त्रासदी की शुरूआत होती है। शहर का एक संपन्न व्यक्ति अर्जुन सिंह जो उसका और उसके पति का परिचित था, उसे सहारा देता है, लेकिन अपनी वासना-तृप्ति का माध्यम बनाकर। डॉ.सिन्हा ने अपना घर अर्जुन सिंह के हाथों बिकवा दिया था। वहाँ मरम्मत का कार्य शुरु होने से आकाशगंगा वहाँ से निकलकर अस्पताल में आती है जहाँ कई दिनों तक भविष्य को भर्ती रखा गया था;जहाँ भविष्य ने अंतिम सांसें ली थीं।

भविष्य को बाल-ल्यूकीमिया हो गया था, जिसके शिकार होकर आकाशगंगा के दो भाई भी मौत के मुख में जा चुके थे। भविष्य की मौत का जिम्मेदार डॉ. सिन्हा आकाशगंगा को ही मानते थे। उनका मानना था कि आकाशगंगा के खून में यह रोग होने के कारण ही भविष्य को यह रोग लगा था। भविष्य के अंतिम संस्कार के बाद आकाशगंगा को जिम्मेदार ठहराते हुए वे कहते हैं – "तुमसे शादी करने की गलती की मैंने, गोरे चेहरे को देख माताजी ढुल गई थीं, पर तुम्हारा रक्त ही दूषित है , तुम्हारे दो भाई ल्यूकीमिया से मरे और मेरा भविष्य भी तुम्हारे जहरभरे रक्त की भेंट चढ़ गया। तुमसे मुझे अब कुछ लेना-देना नहीं। जो चाहो करो, जहाँ चाहो जाओ।"६

आकाशगंगा जब वाशिंगटन कुछ दिनों के लिए जाती है, तब धोखे से घर बेंचकर दोनों बेटियों को लेकर डॉ. सिन्हा भारत चले जाते हैं । आकाशगंगा निराधार बन जाती है। उसके जीवन का आधार बनकर आया हुआ अर्जुन सिंह उसे केवल अपनी वासनापूर्ति का साधन बनाता है। आकाशगंगा के उस समय के मनोभावों को लेखिका ने इन शब्दों में ढाला है – "कब से पुरूष का स्पर्श वह भूल चुकी थी। पति से मिलता रहता था- अपमान, क्रोध, लांछन। वह अपनी दृष्टि में ही अपने को हीन समझने लगी थी। कैंसर का आनुवंशिक तत्व, डी.एन.ए., तो वही विरासत में लाई थी न। उसी से भविष्य ने पाया था। अपराधिनी तो वह थी

ही ;अब अर्जुनसिंह जैसे अनजाने व्यक्ति से इतना दुलार, इतना मान मिल रहा था, कुछ दिन बाद उनका सान्निध्य बुरा नहीं लगा। इस रिश्ते में -अगर कुछ रिश्ता था तो वह केवल शरीर का था- उसे तृप्ति तो मिल रही थी, पर वह वांछनीय नहीं था, वह जानती थी यह उसकी मजबूरी नहीं थी, वह बंदी नहीं थी, किसी भी दिन दरवाजा खोलकर होटल से बाहर जा सकती थी ;पर उसे लगा कि वह जाना नहीं चाहती, एकदम निष्क्रिय रहने, होटल में रहने की सुविधा और एक पुरूष का हर वक्त उसकी इच्छापूर्ति करना एक सुखद अनुभव था।"७

आकाशगंगा अपनी जीवनरूपी सरिता को उसी परिस्थिति में बहने देने के लिए मजबूर है। केवल इसी आशा के साथ कि कहीं-न-कहीं जल्दी या देरी से कोई-न-कोई हल तो निकलेगा। वह हल भी निकल आता है जब अर्जुन सिंह अवैधानिक कामगरों को नौकरी देने और उनके फर्जी कागज़ात बनाने के अपराध में गिरफ्तार हो जाता है । आकाशगंगा जब सुबह के अखबार में यह समाचार पढ़ती है तब कुछ कपड़े और गहने लेकर होटल से हंमेशा के लिए निकल जाती है। उसे जिस स्वतंत्रता का अनुभव होता है उसका वर्णन लेखिका ने इन शब्दों में किया है – "हाँ खुले में बैठकर कितना अच्छा लग रहा है, वह मुक्त है, स्वतंत्र – मन में ढेर सी शान्ति भर उठी है, न पीछे का दु:ख- न आगे का भय- वह अपने को देखती है; एक औरत जिसके न कोई आगे है, न पीछे।"८

उस दिन आकाशगंगा अपने घर में जाती है। संयोगवश उसके पास की चाबी से घर के दरवाजे का ताला खुल जाता है।वह रात वहाँ बिताती है और सुबह वापस निकलते समय उसे उसके नाम का ग्रीन कार्ड भी डाक के डिब्बे में से मिल जाता है। वह पड़ोसिन मार्था के पास जाकर रहने के लिए जगह ढूंढने को कहती है। मार्था एक फ्लैट का कमरा उसे दिलवाती है जो चंद दिनों में खाली होनेवाला था। वहाँ भविष्य का इलाज करनेवाला डोक्टर एरिक एरिकसन रहता था, जो कुछ दिनों बाद स्विट्जरलैंड जानेवाला था।

आकाशगंगा और एरिक के बीच अंतरंग संबंध बन जाते हैं। लेकिन एरिक के साथ जुड़े संबंधों में वासना नहीं थी। दोनों साथ रहना चाहते थे, लेकिन डॉक्टर के रूप में एरिक के कमिन्टमेन्ट और भारतीय नारी के रूप में आकाशगंगा की मर्यादाएँ बीच में आ रही थीं। एरिक के जीवन का एक ही उदेश्य था, बाल कैंसर का उपचार ढूँढना । इस बीमारी की वजह से ही आकाशगंगा को उसने भविष्य से अलग होते हुए देखा था। एरिक अपने मन की इच्छा को आकाशगंगा के सामने प्रकट करता है कि वह उसे एक बच्चा देना चाहता है, जो आगे जाकर उसका सहारा बने, जो उन दोनों के मिलन का प्रतीक हो। आकाशगंगा कुछ निर्णय नहीं कर पाती है और एरिक के जाने के बाद भारत वापस लौटने का निर्णय करती है। वह भटकती जिंदगी से मुक्त होकर परिवार के साथ जीवन बिताना चाहती थी। एरिक अपना जीवन कैंसर रिसर्च और उपचार में अर्पित कर देता है, ताकि आगे जाकर किसी भी माँ-बाप को बाल –ल्युकीमिया अपना बच्चा न खोना पड़े।

आकाशगंगा जब अर्जुनसिंह द्वारा दिये गए गहने बेचने जाती है तब उसे अर्जुनसिंह की स्वार्थी मनोवृत्ति का पता चलता है। एक हार को छोडकर बाकी गहने नकली थे। एरिक उसका दिल्ली तक का टिकट बुक करवा देता है। सफर में एरिक से अलग होते समय वह उसका स्थायी पता नहीं ले पाती। आकाशगंगा की जिंदगी के इस पड़ाव के विषय में लेखिका ने लिखा है कि – "यदि जिंदगी एक पुस्तक होती, तो यह भी एक अध्याय होता, जो समाप्त हो गया। वह अमेरिका और भारत के बीच यात्रा में है- अब क्या नया अध्याय खुलेगा, दुखद और सुखद –पर- वह स्वयं नहीं जानती। बस एक उत्कंठा है- बेटियों को ह्रदय से लगाने की - "९

उपर्युक्त प्रसंगों को देखते हुए कहा जा सकता है कि आकाशगंगा के जीवन की यह त्रासदी रही कि पहले तो वह पति द्वारा त्यागी गई, बाद में अर्जुनसिंह ने उसे अपनी हवस का शिकार बनाया। सच्चा प्रेम और सहानुभूति मिली तो एरिक एरिकसन से, लेकिन दोनों हमेशा साथ

नहीं रह सकते थे। क्योंकि एरिकसन का लक्ष्य लोकमंगल का था, जिसमें आकाशगंगा स्वयं बाधा बनना नहीं चाहती थी।

आकाशगंगा भारत में अपने ससुराल पहुंचती है तो उसके सास-ससुर एवं बेटियाँ उसे सहर्ष अपना लेते हैं , लेकिन डॉ. सिन्हा तो उसे जिंदगीभर के लिए माफ न करने की कसम खाकर बैठे थे। लेखिका ने बालविवाह एवं नारी के वैधव्य जीवन के अभिशाप को भी आकाशगंगा की विधवा बुआ के जीवन को केंद्र में रखकर चित्रित किया है। जैसे – "मुन्नी बुआ स्वयं गोरी चिट्टी थीं , उनका बालविवाह किसी रियासत के दीवान के बेटे से हुआ था, फूफा जी पंद्रह सोलह साल के थे- राजकुमारों जैसा रंग-रूप, दो साल बाद घोड़े से गिरकर उनका देहांत हो गया था। तेरह साल की आयु से वह वैधव्य ढो रही थीं – यानी पिछले सत्तर सालों से उपेक्षिता। एक अनावश्यक विराम की तरह उनका कोई अपना घर, अपना ठिकाना नहीं था – ससुराल जाती थीं तो वहाँ भी अनादर और तिरस्कार पाती थीं , लौटकर घर आती थीं , तो यहाँ भी बड़े से बंगले में एक कुठरिया में ही रहती थीं , जो कि बरामदे के एक कोने में दीवार उठाकर बनवा दी गई थी। उनकी अनुपस्थिति में वहाँ घर की साइकिलें, खाट-खटोले जो बाहर के मेहमानों के लिए रखे जाते थे और उनके अचानक आ जाने पर लॉन में डाल दिये जाते थे।"**१०**

बुआ उसे सलाह देती हैं-जिंदगी में धीरज रखने के लिए। ससुरालवालों के साथ संबंध सुलझाकर चलने की सीख देती हैं। अमेरिका से ससुराल वापस लौटने पर तथा डॉ. सिन्हा की नफरत को देखते हुए आकाशगंगा की मन की भावनाओं को व्यक्त करते हुए लेखिका ने लिखा है – "यह कैसी भँवर में फँस गई है , क्या निकल पाएगी इससे? केवल एक बात स्पष्ट है, डॉ. सिन्हा के लिए उसके मन में क्रोध और घृणा के अतिरिक्त कुछ और नहीं बचा है। ऐसे पुरूष को वह किसी भी हालत, किसी भी मजबूरी में बरदाश्त नहीं कर सकती। धीरज और क्षमा-क्या यह पुरूषों पर लागू नहीं होती ?"**११**

पहले के जमाने में यह माना जाता था कि स्त्री-धन यानी औरत को मिले हुए गहने ही उसकी जमापूंजी होते हैं। जब आकाशगंगा को उसकी सास उसके गहने सौंपते हुए यह बात कहती है तब अपनी आधुनिक विचारधारा का परिचय देते हुए आकाशगंगा वर्तमान समय की हकीकत पर प्रकाश डालते हुए कहती है – "अम्मा जी, आप किस जमाने की बात कर रही हैं ? आज औरत का इन्वेस्टमेंट वह स्वयं ही है, पीएच.डी., एम.बी.ए. – उसकी शिक्षा, आत्म-निर्भरता, उसकी बदलती हुई मानसिकता –"**१२**

समाज में पुरूष को व्यभिचार करने की स्वतंत्रता होती है, उस पर कोई प्रश्न नहीं उठता, जबकि स्त्रियों के लिए जो बंधन होते हैं उसे लेखिका ने इस प्रकार शब्दबद्ध किया है- "यह तो प्रकृति का नियम है, नर अपना बीज बिखेरता रहता है जिससे उसकी नस्ल चलती रहे, पुरूष का स्वभाव ही ऐसा होता है पर स्त्री को सीमाबंध रखा जाता है, जिससे वंश दूषित न हो जाए। उसकी संतान का पिता कौन है- यह जानना राज्य, परिवार और समाज के लिए बहुत आवश्यक है।"**१३**

कुछ दिनों बाद दो यथार्थ घटनाओं से उसका सामना होता है। उसे यह मालूम चलता है कि वह गर्भवती है तथा डॉ. सिन्हा अपनी विधवा सह-अध्यापिका के साथ घर बसाने का निर्णय कर चुके थे। साथ ही उसे यह एहसास हुआ कि उसे आसानी से मुक्ति तथा जीवन की स्वतंत्रता मिल गई थी। यहीं पर उपन्यास का पहला खंड समाप्त हो जाता है और दूसरे खंड की शुरूआत में आकाशगंगा को कैलिफोर्निया में प्रवीण जी एवं प्रवीणबहन के घर में रहते हुए दिखाया गया है। प्रवीणबहन एवं प्रवीण जी से आकाशगंगा की मुलाकात भविष्य के इलाज के दौरान उसी अस्पताल में हुई थी।

आकाशगंगा प्रवीणबहन की सेवा करके उनके साथ रहने लगती है। प्रवीणबहन उसे डॉ. सिन्हा के साथ सुलह करके अपनी बेटियों के साथ रहने की सलाह देती हैं।या फिर तलाक लेकर दूसरा ब्याह करने की सलाह देती हैं तब आकाशगंगा बताती है कि उसे अकेले ही

गुजारा करना है। यह सुनकर प्रवीणबहन अपने व्यंग्य से उसे यथार्थ की धरती पर पटकते हुए कहती हैं कि – "अरे- तुझसे तो थोड़े दिन भी बिना मर्द के गुजारा नहीं चला। नतीजा सामने तो है –"**१४**

उपर्युक्त संदर्भ को देखते हुए प्रवीणबहन द्वारा आकाशगंगा को किया गया यह व्यंग्य सही प्रतीत होता है। क्योंकि आकाशगंगा चाहती तो अर्जुन सिंह या एरिकसन के सहारे के बिना भारत अपने ससुराल में वापिस आ सकती थी। लेकिन डॉ. सिन्हा ने उसे त्यागकर जो दु:ख उसे पहुंचाया था, उसके निवारण के लिए उसने परपुरूषगमन का सहारा लिया था, जो उसका सही निर्णय नहीं था।

प्रवीणबहन चाहती है कि आकाशगंगा अपने बच्चे को कैथरिन बसबी को गोद दे दे, क्योंकि वह नि:संतान थी, और हजारों डोलर भर चुकी थी, किसी अन्य देश से बच्चा गोद लेने के लिए | लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी| प्रवीणबहन ने आकाशगंगा को यह सलाह इसलिए दी,ताकि वह उनके घर मान-सम्मान से रह सके, क्योंकि प्रवीण जी को यह मालूम नहीं था कि आकाशगंगा की कोख में पल रहा बच्चा एरिकसन का है, न कि डॉ. सिन्हा का|

विपरीत परिस्थितियों में फंसी आकाशगंगा बच्चे के जन्म के समय उसका मुँह भी नहीं देख पाती और कैथरीन उसे लेकर बहुत दूर चली जाती है| प्रवीण बहन अपनी जिन्दगी की करूण घटना आकाशगंगा को बताती हैं| प्रवीण जी के परदेश चले जाने पर उनका रिश्ता फकीरचंद नामक एक पुरूष से जुड़ गया था| उनके इस अवैध संबंध के बारे में परिवारवालों को पता चलते ही उन लोगों ने फकीरचंद की हत्या करवाके प्रवीणबहन को हमेशा के लिए प्रवीण जी के पास परदेश भेज दिया था| अपने जीवन की इस करूण घटना का जिम्मेदार स्वयं को मानते हुए प्रवीण बहन कहती हैं कि – "फकीरचंद के कतल की पूरी-पूरी जिम्मेदारी मैंने अपने सीने में तलवार की तरह भोंक ली| उसका नाम एक बार होठों पर नहीं लाई| जब यह कैंसर हुआ तो मुझे लगता कि फकीरचंद के कतल की बात सुनकर मैं जो शोक न मना पाई

थी वहीं आँसू , वही सिसकियां मेरे अन्दर जहर बनकर भिद गए थे और अब शरीर और न झेल सका तो टूट गया – कैंसर के रूप में| अंग-अंग को खा रहा है, पहले छातियाँ, फेफड़े, फिर लीवर, फिर अन्दर-ही-अन्दर रेंगता हुआ सब कुछ लील रहा है| कितने सालों से मेरा संगी बन गया है, डॉक्टर एक जगह ठीक करते हैं तो दूसरी जगह फूट पड़ता है| क्या यह मेरे प्यार करने की सजा मुझे मिल रही है? रात के अंधेरे में यही सवाल मुझे डराते रहते हैं – गंगा !" **१५**

उपर्युक्त संदर्भ में प्रवीणबहन के कथन के द्वारा कैंसर रोग की भयानकता तथा इस रोग से व्यक्ति के तन और मन पर क्या असर होता है उसका करूण वर्णन लेखिका ने किया है| यह रोग प्रवीण बहन की जिन्दगी छीन लेता है| आकाशगंगा प्रवीण जी के साथ समझौता एवं सुविधा के रिश्ते को जोड़कर रहने लगती है| लकवे की वजह से कुछ वर्षों बाद प्रवीण जी भी इस दुनिया से चले जाते हैं | वसीयत में वे आकाशगंगा को अन्याय करते हुए अपने बेटे यशवंत के नाम अपनी पूरी जायदाद कर देते हैं | आकाशगंगा की भलमनसाहत का फ़ायदा दोनों पति-पत्नी ने उठाया था- ऐसा कह सकते हैं |

एक खेत का टुकड़ा उसे मिला था, जिसमें ऊगती हुई सब्जियों को बेचने का कार्य वह प्रतिदिन करती थी| एक दिन अचानक उसके सामने एक युवक आकार खड़ा हो जाता है और अपना नाम बताते हुए उसे 'माँ' कहकर पुकारता है| उसका नाम था – स्तव्य स्टीवेन| एरिकसन एवं आकाशगंगा का बेटा | वह बताता है कि उसे भी ल्यूकीमिया से हो गया था, लेकिन उसके पापा एरिकसन के उपचार से वह अब बिलकुल ठीक हो गया था| एरिकसन ने आकाशगंगा की जिन्दगी को संवार दिया था| भविष्य को वह न बचा सका लेकिन स्टीवेन को उसने कैंसरमुक्त करके आकाशगंगा के पास मिलने के लिए भेजा था, जिससे आकाशगंगा का दिशाहीन जीवन खुशियों से भर गया था|

स्टीवेन आकाशगंगा के पास एक दिन के लिए रुकता है और उसके करुण जीवन की कहानी सुनता है |आकाशगंगा अपने जीवन की त्रासदी का वर्णन करते हुए कहती है कि – "मुझे तो सभी रिश्तों में घाटा ही हुआ| गगन बिहारी ने भी छोड़ दिया, बेटियां अलग कर दीं, और प्रवीण जी? पहले उनकी पत्नी की सेवा की, और फिर बरसों उनकी| पत्नी को कैंसर था, और उन्हें स्वयं लकवा लग गया था| न पहले पति से कुछ मिला, न प्रवीण जी से| उन्होंने अपना नया विल बनाया ही नहीं|"**१६**

आकाशगंगा के लिए यशवंत जो कि प्रवीण जी का इकलौता बेटा था और स्वयं का बेटा स्टीवेन उसके लिए जीने का सहारा बन गये थे| यशवंत ने उसे घर से बेघर नहीं किया था, जबकि स्टीवेन ने उसके जीवन को आशापूर्ण बना दिया था| स्टीवेन आकाशगंगा को सांत्वना देते हुए कहता है कि – "अब तुम्हें पाया है तो जीवन से जाने नहीं दूंगा| मैं थोड़ा परेशान था कि कहीं तुम मुझे खाली, दरवाजे से ही तो नहीं लौटा दोगी, मुझे मालूम जो नहीं था कि किन परिस्थितियों ने तुम्हें मुझे अपने से अलग करने को बाध्य किया| लगता था कि मैं अवांछित संतान था, पर अब सच जान गया हूँ| मैं बता नहीं सकता कि मैं कितना खुश हूँ – तुमसे मिलकर, तुम्हारा प्यार देखकर-"**१७**

आकाशगंगा के जीवन में स्टीवेन एक नई जीने की उम्मीद बनकर आता है| उसके आने की और उसको पाने की खुशी में आकाशगंगा की जिन्दगी में खुशी के क्षण वापस आ जाते हैं | कदम-कदम पर सुख एवं दुःखरूपी भावनाओं से रूबरू होनेवाली आकाशगंगा की कथा से संपृक्त उषा प्रियंवदा का 'नदी' उपन्यास नारी संघर्ष की अद्रीतीय महागाथा एवं प्रवासी उपन्यास है | नारी की त्रासदी से पूर्ण ऐसा उपन्यास हिन्दी साहित्य में कोई दूसरा नहीं हो सकता, ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है|

संदर्भ सूची :

१. मनुस्मृति, ९/२६-२८
२. कबीर ग्रंथावली (सटीक), रामकिशोर शर्मा, कामी नर कौ अंग, पृ. २१९

३. समान्तर कोश (हिन्दी थिसारस) संदर्भ खंड: अरविंद कुमार, कुसुम कुमार, पृ. १८५
४. नदी, उषा प्रियंवदा, पृ. ८२
५. वही, पृ.१२-१३
६. वही,पृ. २२
७. वही,पृ. २८-२९
८. वही,पृ. ३५
९. वही, पृ. ५२
१०. वही, पृ. ५८-५९
११. वही,पृ. ६६
१२. वही,पृ. ६९
१३. वही,पृ. ७५
१४. वही,पृ. १०७
१५. वही, पृ. १२६
१६. वही, पृ. १६३
१७. वही, पृ. १६४